Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities, Vol 1 pp. 23-32, 2006
DOI: 10.51220/hjssh.v1i1.5

मध्य हिमालय में राजनीतिक विकास

एम०एम० सेमवाल एवँ चन्द्रशेखर बेंजवाल
राजनीति विज्ञान विभाग, हे०न०ब० गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर, गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

राजनीतिक विकास राजनीतिक समाजशास्त्र की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात विभिन्न समाजों में राजनीतिक संस्थाओं एवं राजनीतिक प्रक्रियाओं के अधययन की आवश्यकता ने राजनीतिक विकास की अवधारणा का सूत्रपात किया। अविकसित राष्ट्रों ने न केवल आर्थिक व सामाजिक विकास पर ध्यान दिया बल्कि उन्होंने राजनीतिक विकास को भी स्वीकारा। विकास की इन प्रक्रियाओं से पूर्व यह कहा गया था कि आर्थिक विकास एवं औद्योगिक दृष्टि से अल्पविकसित तथा अविकसित या विकासशील देशों को पश्चिमी राष्ट्रों द्वारा प्राप्त तथाकथित उपलब्धियों की ओर बढ़ना पड़ेगा और यह माना गया कि यदि एक बार राष्ट्र सामाजिक आर्थिक विकास को प्राप्त कर ले तो राजनीतिक विकास स्वत: ही हो जायेगा।[1]

राजनीतिक विकास की अवधारणा ने 60 के दशक में समाजशास्त्रियों का ध्यान आकर्षित किया जब वे तीसरी दुनियाँ के देशों में होने वाले राजनीतिक परिवर्तनों की प्रक्रिया का अध्ययन कर रहे थे।[2]

वस्तुत: राजनीतिक विकास की परिभाषा 'विकास' शब्द पर आधारित है। विकास मानव जीवन की विशेषता है, विभिन्न युगों की परिस्थितियों के प्रभाव से प्रत्येक संस्था, उसका आचरण, सभ्यता और संस्कृति का विकास होता है। 'विकास' शब्द का प्रयोग ऑक्सफोर्ड इंगलिश डिक्शनरी में तीन अर्थों में किया गया है[3]- *एक क्रमिक उन्मीलन, किसी वस्तु की अधिकतम जानकारी एवं जीवाणु का विकास।*

विकास को कुछ विद्वानों ने सामाजिक परिवर्तन का ही समानार्थक बताया है तथा सीखने की सामान्य योग्यता व प्रक्रिया में अपने निष्पादन में सुधार करना माना है, वहीं कुछ अन्य लोगों ने विकास शब्द को किसी सूक्ष्म रूप में परिभाषित लक्ष्य की ओर प्रगति के लिए प्रयुक्त माना है। अत: विकास शब्द का तात्पर्य एक ओर तो व्यापक रूप से अनिश्चित लक्ष्य की ओर प्रगति है तथा दूसरी ओर निर्धारित लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ना है।[4]

वस्तुत: विकास प्रक्रिया शनै: शनै: एवं निरन्तर जारी रहती है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत परिपक्वावस्था के लक्ष्य की ओर परिवर्तनों का प्रगतिशील क्रम निहित रहता है। विकास की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप नवीन योग्यताएं प्रकट होती रहती हैं।

उपरोक्त विवेचन के अनुसार 'विकास' एक बहुपक्षीय प्रक्रिया है अत: हमें विकास शब्द की व्याख्या को सामाजिक विकास के सन्दर्भ में देखना चाहिए। कतिपय राजनीतिक विचारकों ने राजनीतिक विकास व राजनीतिक आधुनिकीकरण को समान प्रक्रिया माना है। इसका मुख्य कारण दोनों में

©SHARAD

लाक्षणिक दृष्टि से मौलिक अन्तर का न होना है। राजनीतिक विकास की परिभाषाओं में राजनीतिक विचारकों द्वारा इस तथ्य को स्वीकारा गया कि राजनीतिक विकास समाज में व्यापक रूप से चल रही आधुनिकीकरण प्रक्रियाओं का एक पहलू है। जो समाज के समस्त क्षेत्रों को प्रभावित करता है और उसके राजनीतिक पहलू को राजनीतिक विकास की संज्ञा दी जाती है। राजनीतिक विचारकों ने राजनीतिक विकास एवं राजनीतिक आधुनिकीकरण को दो युग्मज अर्थात जुड़वा प्रक्रियाएं माना है। राजनीतिक आधुनिकीकरण में जनता की राजनीतिक सहभागिता, धर्म निरपेक्षता, सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि और व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास होता है।

राजनीतिक आधुनिकीकरण के संप्रत्ययीकरण इसके उपागमों एवं प्रारूपों की ओर समाज शास्त्रियों एवं नृवैज्ञानिकों ने अन्य सामाजिक वैज्ञानिकों की अपेक्षा अधिक ध्यान दिया है।[5] राजनीतिक विकास व आधुनिकीकरण के संप्रत्ययों की अस्पष्टता के कारण दोनों को कतिपय विद्वानों ने समानार्थक रूप में प्रयुक्त किया है। लेकिन साथ ही अन्य विद्वान दोनों प्रक्रियाओं को एक दूसरे से सम्बन्धित मानते हुए पृथक-पृथक प्रक्रियाओं के रूप में भी देखते हैं।

विभिन्न विद्वानों में दोनों प्रक्रियाओं को पृथक मानने वालों में सर्वप्रथम हटिंगटन के नाम का उल्लेख किया जाता है। राजनीतिक साहित्य में राजनीतिक विकास पद को प्रमुख रूप से चार प्रकार से प्रयुक्त किया गया है।[6] *प्रथम भौगोलिक आधार पर* कुछ विद्वानों ने विकासशील देशों की राजनीति के किसी भी पहलू के अध्ययन को राजनीतिक विकास की संज्ञा दी है। *द्वितीय व्युत्पत्ति की दृष्टि से* आधुनिकीकरण की प्रक्रियाओं एवं राजनीतिक पहलुओं एवं परिणामों से सम्बन्धित अध्ययनों को राजनीतिक विकास माना गया। *तृतीय उद्देश्यमूलक आधार पर* राजनीतिक विकास एक ऐसा आन्दोलन माना गया जिसमें अनेक लक्ष्यों की प्राप्ति के प्रयास किये जाते हैं। इस आधार पर प्रजातंत्र स्थायित्व, वैधाता, सहभागिता, एकीकरण, विभागीय तंत्र इत्यादि लक्ष्यों की प्राप्ति को राजनीतिक विकास की संज्ञा दी गई है। *चतुर्थ प्रकार्यात्मक दृष्टि से* राजनीतिक विकास एक आधुनिक औद्योगिक समाज की विशेषता है।[7] तथा इसे राजनीतिक परिवर्तन का दूसरा नाम माना गया है।[8] राजनीतिक विकास संस्कृति का विसरण और जीवन के पुराने प्रतिमानों को नई मांगों के अनुकूल बनाने, उन्हें उनके साथ मिलाने या उनके साथ सामन्जस्य बैठाना है।[9]

इस प्रकार राजनीतिक विकास वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा अविकसित या विकास पथ पर अग्रसर राष्ट्रों की राजनीतिक व्यवस्था के किसी पक्ष के सन्दर्भ में विशिष्ट जानकारी प्राप्त की जाती है, तथा उन परिणामों का अध्ययन भी इस प्रक्रिया में शामिल होता है जो सामाजिक मूल्यों के पुनर्निर्माण एवं वितरण से सम्बन्धित होती है या आधुनिकीकरण से उत्पन्न होती है। साथ ही राजनीतिक विकास को एक ऐसा अभियान माना जा सकता है जो कि शासन के सर्वोत्तम प्रकार प्रजातंत्र के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक हो, प्रजातंत्रीकरण शासन व्यवस्था के आने के फलस्वरूप जनता के शासन द्वारा समानता, स्वतंत्रता बहुमत का निर्णय, नीति निर्णायकों के ऊपर नियंत्रण तथा राजनीतिक व्यवस्था में स्थायित्व, वैधता, सहभागिता, एकीकरण आदि लक्ष्य प्राप्त किये जाते हैं। राजनीतिक विकास प्रक्रिया

में आधुनिकीकृत समाज के समस्त लक्षण समाहित होते हैं।

इस प्रकार जनसाधारण को राजनीतिक व्यवस्था में आधिकाधिक सहभागी बनने व सक्रिय रहने के अवसर राजनीतिक विकास उपलब्ध करवाता है। राजनीतिक विकास जनता की वास्तविक सहभागिता भी बढ़ाता है। इस रूप में जितनी अधिक जनता की सहभागिता होगी उतना ही राजनीतिक विकास सम्भव होगा। जनसाधारण में राजनीतिक विकास द्वारा राजनीतिक व्यवस्था के प्रति आस्थाएं मजबूत बनती चली जाती हैं।

प्रस्तुत शोध का अध्ययन क्षेत्र उत्तरांचल राज्य का मध्य हिमालय क्षेत्र है। इसके अन्तर्गत मध्य हिमालय के छः जनपद- चमोली, रूद्रप्रयाग, पौड़ी, टिहरी, उत्तरकाशी व देहरादून में से प्रत्येक जिलेवार दो-दो विकासखण्डों को अध्ययन हेतु चयनित किया गया है। प्रत्येक जनपद के दो-दो विकासखण्डों से 25-25 उत्तरदाताओं का साक्षात्कार लिया गया। इस प्रकार कुल 300 उत्तरदाताओं को साक्षात्कार में सम्मिलित किया गया। उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों को संकेतन पद्धति द्वारा परगणीय मूल्यों में परिवर्तित किया गया। तथा शोध सम्बन्धी तथ्यों का विश्लेषण एस0पी0एस0एस0 (SPSS) पैकेज द्वारा किया गया। विश्लेषण की प्रविधियों में टी (t) टेस्ट, एनोवा (Analysis of variance) एवं सहसम्बन्ध (r) की गणना सम्मिलित है।

मध्य हिमालय में राजनीतिक विकास का अवलोकित स्वरूप

वर्तमान अध्ययन हेतु संग्रहित आंकड़ों के विश्लेषण से प्रमाणित होता है कि मध्य हिमालय के उत्तरदाताओं के राजनीतिक विकास एवं आयु के मध्य सहसम्बंध का मान ($r = -0.30$) बहुत अधिक नहीं है। तथापि यहां स्पष्ट ऋणात्मक सहसम्बन्ध दृष्टिगोचर हो रहा है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि उत्तरदाताओं की आयु बढ़ने के साथ-साथ उनके राजनीतिक विकास स्तर में धीरे-धीरे कमी आती जा रही है।

मध्य हिमालय के ग्रामीण क्षेत्रों के सम्बन्ध में यह स्थिति स्वाभाविक कही जा सकती है क्योंकि यहां के अधिकांश क्षेत्रों में स्वतंत्रता प्राप्ति के कई दशक बाद भी विद्यालयों तथा उच्च शिक्षण संस्थानों का अभाव बना रहा, जिस कारण प्रौढ़ आयु का एक बड़ा प्रतिशत शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ा है। विगत कुछ दशकों से मध्य हिमालय क्षेत्र में विद्यालयों व उच्च शिक्षण संस्थानों में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है जिसका लाभ युवा वर्ग को प्राप्त हो रहा है। साथ ही युवा वर्ग का नगरीय क्षेत्रों से प्रौढ़ों की तुलना में अधिक सम्पर्क उनके वैचारिक स्तर को सकारात्मक रूप से प्रोत्साहित करता है। परिणामतः इस क्षेत्र के उत्तरदाताओं के आयु वर्द्धन के साथ-साथ राजनीतिक विकास में अवमूल्यन स्वाभाविक है।

लिंग संरचना एवं राजनीतिक विकास

सामान्यतः यह समझा जाता है कि लैंगिक भेद वैचारिक एवं जानकारी स्तरान्तरों को उत्पन्न करता है। यह तथ्य भारत के सन्दर्भ में एक विशेष महत्व रखता है क्योंकि भारतीय समाज मूलतया

पुरूष प्रधान है जिसके फलस्वरूप सभी महत्वपूर्ण विषयों में पुरूषों की अभिरूचियों का स्तर महिलाओं की अपेक्षा उच्च होना स्वाभाविक रूप से अपेक्षित है। राजनीतिक विषयों के विश्लेषण में इस मान्यता का मूल्य और भी बढ़ जाता है। अतएव प्रस्तुत अध्ययन में लिंग आधारित वर्गीकरण कर राजनीतिक विकास सूचकांक को मूल्यांकित करने का प्रयास किया गया है (तालिका -1)।

तालिका-1: राजनीतिक विकास सूचकांक का लिंग आधारित वर्गीकरण

क्र०सं०	लैंगिक वर्ग	आवृत्ति	मध्यमान (%)	मानक विचलन (%)	t मान	p मान
1	महिला	106	31.38	15.87	9.24	
2	पुरुष	194	50.29	18.51		0.00

संकलित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि मध्य हिमालय के गढ़वाल मण्डल की महिला व पुरूषों के राजनीतिक विकास सूचकांक में अन्तर व्याप्त है। यहाँ के पुरुषों का राजनीतिक विकास सूचकांक का मध्यमान (50.29%), महिलाओं (31.48%) की अपेक्षा अधिक उच्च है। साथ ही इन दोनों लैंगिक वर्गों के राजनीतिक विकास सूचकांकों में अन्तर t (9.24) परीक्षण के आधार पर p का मान 0.00 सार्थक पाया गया है। p का मान 0.05 से कम होने पर महिला व पुरुष उत्तरदाताओं के राजनीतिक विकास सूचकांक में अन्तर स्पष्ट है। यद्यपि महिलाओं का राजनीतिक विकास हो रहा है, किन्तु महिलाओं का राजनीतिक विकास पुरुषों की तुलना में न्यून है। इसका मुख्य सम्भावित कारण मध्य हिमालय के ग्रामीण क्षेत्रों की सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियां हैं।

जाति संरचना एवं राजनीतिक विकास

भारतीय समाज में जाति व्यवस्था अपना विशिष्ट महत्व रखती है। ग्रामीण जीवन के सभी पक्षों पर जाति का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। जाति किसी भी सदस्य के व्यक्तित्व को काफी हद तक प्रभावित करती है।[10] राजनीति पर जाति के प्रभाव में हुई वृद्धि को राजनीतिज्ञों, प्रशासनाधिकारियों व समाज शास्त्रियों ने स्वीकार किया है।[11] अनेक अध्ययनों से सिद्ध हुआ है कि सामाजिक दृष्टि से

तालिका-2: राजनीतिक विकास सूचकांक का जातीय वर्ग आधारित वर्गीकरण

क्र. सं0	जातीय वर्ग	आवृत्ति	मध्यमान (%)	मानक विचलन (%)	f मान	p मान
1	ब्राह्मण	58	55.56	19.84	11.06	0.00
2	क्षत्रिय	95	43.12	18.76		
3	अनु0 जाति	82	37.31	19.54		
4	अनु0 जनजाति	65	41.75	17.04		

उच्च व प्रतिष्ठित जातियां सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से अधिक सम्पन्न होने के कारण मध्य और निम्न जातियों के बहुमत पर अपना राजनीतिक वर्चस्व स्थापित कर लेती हैं।[12] मध्य हिमालय क्षेत्र का विभिन्न जातीय वर्ग जातीय भेद के प्रभाव से सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक दृष्टि से प्रभावित हो रहा है। उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि मध्य हिमालय क्षेत्र में निवास करने वाले ब्राह्मण जाति के उत्तरदाता, क्षत्रिय, अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के उत्तरदाताओं से राजनीतिक विकास की दृष्टि से आगे हैं (55.56%)। द्वितीय स्थान पर क्षत्रिय (43.12%), तृतीय स्थान पर अनुसूचित जनजाति का राजनीतिक विकास सूचकांक (41.75%) तथा सबसे कम राजनीतिक विकास सूचकांक अनुसूचित जाति (37.31%) का है। इस तथ्य को f का मान भी प्रमाणित करता है। (चूंकि $p< 0.05$) इससे स्पष्ट होता है कि उच्च जातियां ब्राह्मण एवं क्षत्रिय राजनीतिक विकास सूचकांक की दृष्टि से अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति से आगे हैं। जाति आधारित भेदभाव का मुख्य कारण संकुचित दृष्टिकोण व परम्परावादी मान्यताएं हैं। जिनके कारण पिछड़ी जातियों को सवर्णों की भांति सामाजिक अधिकार प्राप्त नहीं हो पाये हैं। तथापि उपरोक्त परिणामों के आलोक में कहा जा सकता है कि पिछड़ा जातीय वर्ग अब शिक्षा के प्रति सजग हो रहा है। आरक्षण का लाभ मिलने के कारण वे राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे हैं। यद्यपि सवर्ण जाति के उत्तरदाताओं को सामाजिक प्रभुत्व का लाभ मिलने से उनका राजनीतिक विकास सूचकांक, अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के उत्तरदाताओं से उच्च अवश्य है।

शिक्षा संरचना एवं राजनीतिक विकास

शिक्षा वह सब सीखने-सिखाने की प्रक्रिया है जो जीवन को बेहतर तरीके से जीने में उसे सामर्थ्यवान बनाती है। शिक्षित व्यक्ति सुगमता व शीघ्रता से योजना का निर्माण और निर्णय ले सकता राजनीतिक जानकारियां शिक्षा द्वारा ही प्राप्त की जा सकती हैं। व्यक्ति की शिक्षा जितनी अधिक व्यापक होगी उतना ही वह सरकार की नीतियों के प्रति सजग होगा तथा राजनीति का अनुसरण कर पायेगा तथा उसमें राजनीतिक विषयों को प्रभावित करने की अधिक योग्यता होगी[14]।

तालिका-3: राजनीतिक विकास सूचकांक का शैक्षिक स्तर आधारित वर्गीकरण

क्रं०सं०	शैक्षिक स्तर	आवृत्ति	मधयमान (%)	मानक विचलन (%)	f मान	pमान
1	अशिक्षित	47	20.34	10.70	106.94	0.00
2	शिक्षित	106	35.33	13.38		
3	माध्यमिक	74	49.52	14.01		
4	स्नातक	42	61.19	12.12		
5	स्नातकोत्तर	31	69.58	10.40		

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण में उल्लिखित राजनीतिक विकास सूचकांक स्तरान्तर को f मान (106.94) भी प्रमाणित करता है। (चूंकि $p< 0.05$) इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षावर्द्धन के साथ-साथ व्यक्ति के राजनीतिक विकास में भी वृद्धि होती है।

उपरोक्त परिणाम के परिप्रेक्ष्य में यह कहना उचित होगा कि शिक्षा से व्यक्ति में राजनीतिक विषयों पर चिन्तन करने व राजनीतिज्ञों को प्रभावित करने की कुशलता आती है। शिक्षित व्यक्ति राजनीतिक पर्यावरण में विश्वास रखता है, विश्वास की भावनाओं को प्रदर्शित करता है। इन्हीं समस्त कारणों से वर्तमान अध्ययन में शैक्षिक स्थिति में उच्चता उत्तरदात्ताओं के राजनीतिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव डालती पायी गई है।

पारिवारिक संरचना एवं राजनीतिक विकास

परिवार व्यक्ति की प्रारम्भिक पाठशाला है जहाँ पर उसे विभिन्न संस्कारों व मूल्यों का प्रशिक्षण प्राप्त होता है। परिवार छोटे रूप में समाज और व्यक्ति के समाजीकरण का महत्वपूर्ण साधन है।[15] वस्तुतः परिवार से ही पारिवारिक सदस्य राजनीतिक निष्ठा का प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। अतः परिवार व्यक्ति के राजनीतिक जीवन की अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था हैं।

तालिका-4: राजनीतिक विकास सूचकांक का पारिवारिक संरचना आधारित वर्गीकरण

क्रं०सं०	पारिवारिक संरचना वर्ग	आवृत्ति	मध्यमान (%)	मानक (%)	t मान	pमान
1	एकल	141	46.40	18.57	2.30	0.022
2	संयुक्त	159	41.20	20.52		

तालिका 4 में एकल परिवार के उत्तरदाताओं का राजनीतिक विकास सूचकांक मान (46.40%) संयुक्त परिवार के उत्तरदाताओं (41.20%) की तुलना में कुछ आगे है। दोनों तुलनात्मक समूहों के मध्य लघु अन्तर व्याप्त है। क्योंकि 't' (2.30) परीक्षण के आधार पर 'p' का मान (0.22-0.05 से कम होने के कारण प्रमाणिक है। अतः मध्य हिमालयी क्षेत्र में राजनीतिक विकास की दृष्टि से पारिवारिक संरचना उत्तरदाताओं को प्रभावित करती है।

आय एवं राजनीतिक विकास सूचकांक

संकलित तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर मध्य हिमालयी क्षेत्र के उत्तरदाताओं का राजनीतिक विकास एवं आय के मध्य सहसम्बन्ध धनात्मक ($r= +0.55$) है। स्पष्ट है कि मध्य हिमालयी क्षेत्र के उत्तरदाताओं के राजनीतिक विकास वृद्धि में आयवर्द्धन सहायक है। उत्तम आर्थिक स्थिति वाले व्यक्ति की तुलना में निर्धन व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा कम होने के साथ ही वह

तालिका -5: राजनीतिक विकास सूचकांक का वैवाहिक स्थिति आधारित वर्गीकरण

क्रं०सं०	वैवाहिक स्थिति	आवृत्ति	मध्यमान (%)	मानक विचलन (%)	t मान	p मान
1	विवाहित	222	41.19	20.54	4.22	0.000
2	अविवाहित	78	50.61	15.49		

राजनीतिक क्रिया कलापों हेतु समय नहीं दे पाता। अस्तु आयवर्द्धन का अवलोकित राजनीतिक विकास सूचकांक सकारात्मक होना मध्य हिमालयी क्षेत्र के सन्दर्भ में स्वाभाविक ही कहा जा सकता है।

विवाहित वर्ग के उत्तरदाता, अवविवाहित वर्ग के उत्तरदाताओं से राजनीतिक विकास की दृष्टि से न्यून स्थिति में हैं। इस न्यूनता का सम्भावित कारण विवाहित वर्ग का पारिवारिक जीवन में प्रवेश से विभिन्न उत्तरदायित्वों से घिरे होने के कारण राजनीतिक विषयों हेतु अविवाहितों की तुलना में कम समय दे पाते हैं। जबकि अविवाहित पारिवारिक उत्तरदायित्वों से स्वायत्त होने के कारण राजनीतिक गतिविधियों, राजनीतिक क्रियाकलापों, गोष्ठियों में अधिकाधिक सहभागिता निभा सकते हैं। अतः निष्कर्षतः वर्तमान अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं का राजनीतिक विकास उनकी वैवाहिक स्थिति से प्रभावित है।

तालिका-6: राजनीतिक विकास सूचकांक का व्यवसाय आधारित वर्गीकरण

क्र०सं०	व्यावसायिक वर्ग	आवृत्ति	मध्यमान (%)	मानक विचलन (%)	f मान	pमान
1	नौकरी	53	58.43	15.29	62.05	0.00
2	व्यापार	43	57.02	15.72		
3	कृषि	155	31.88	15.69		
4	अध्ययनरत	49	53.12	15.34		

मध्य हिमालय क्षेत्र के उत्तरदाताओं के राजनीतिक विकास पर पड़ने वाले व्यावसायिक प्रभाव को अवलोकित करने से विदित होता है कि इस क्षेत्र में व्यावसायिक वर्ग नौकरी वाले उत्तरदाताओं का राजनीतिक विकास सूचकांक सर्वोच्च (58.43%) तथा द्वितीय स्थान पर लघु अन्तर के साथ व्यापारी वर्ग (57.02%) है। ये दोनों वर्ग आर्थिक रूप से सम्पन्न होने के कारण निजी जीवन के कार्यों के अतिरिक्त राजनीतिक क्रियाकलापों में सक्रिय भागीदार बनने, राजनीति सम्बन्धी सूचना साधनों को प्राप्त करने की व्यवस्था आसानी से कर पाते हैं। जबकि तृतीय स्थान पर अध्ययनरत उत्तरदाताओं का राजनीतिक विकास सूचकांक (53.12%), तथा अन्तिम स्थान पर कृषक वर्ग (31.

88%) है। कृषक वर्ग का राजनीतिक सूचकांक न्यून होने का कारण कृषक समुदाय का शैक्षिक रूप से पिछड़ापन व कमजोर आर्थिक स्थिति है। समस्त व्यावसायिक वर्गों में सर्वाधिक राजनीतिक विकास सूचकांक अन्तर नौकरी व कृषकों के मध्य व्याप्त है। समस्त वर्गों के मध्य स्तरान्तर को f मान (62. 05) भी प्रमाणित करता हैं (क्योंकि $p< 0.05$)।

निष्कर्ष

मौलिक रूप से राजनीतिक विकास की अवधारणा में राजनीति की एक ऐसी स्थिति सम्मिलित होती है जो आर्थिक उन्नति, प्रगति, आधुनिकीकरण, प्रभावपूर्ण नौकरशाही व राजनीतिक सहभागिता की प्रगति में सहायक हो। राजनीतिक विकास प्रक्रिया पथ पर अग्रसर उस राजनीतिक व्यवस्था को माना जाता है जिसमें जनता में अभिवृत्तात्मक व व्यावहारिक परिवर्तन होते हैं। जनता राजनीतिक क्रियाकलापों में सहभागी बनती है, जिसके फलस्वरूप राजनीतिक विवादों पर नियंत्रण व जनता की मांगों का उचित निदान होता है।

स्पष्ट रूप से राजनीतिक विकास बहुपक्षीय विकास प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि पहलुओं पर एक साथ प्रारम्भ होती है। जैसे ही समाज में विकास प्रारम्भ होता है आर्थिक प्रक्रियाओं में परिवर्तन आने लगता है। इसके बाद राजनीतिक क्रियाकलापों की प्रक्रिया में परिवर्तन आता है। राजनीतिक विकास की प्रक्रिया में राजनीतिक व्यवस्था के आंतरिक व वाह्य तत्वों के विकास में योगदान प्राप्त होता है, तथा उचित नियोजन के द्वारा राष्ट्रीय समस्याओं का निराकरण व राष्ट्र के सर्वांगींण विकास का मार्ग प्रशस्त होता है।

मध्य हिमालय के गढ़वाल मण्डल के समग्र उत्तरदाताओं की आयु व राजनीतिक विकास के मध्य प्राप्त सह-सम्बन्ध स्वरूप से स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं की आयु में निरंतर वृद्धि से उनके राजनीतिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। लैंगिक वर्ग आधारित राजनीतिक विकास मूल्यांकन से स्पष्ट होता है कि महिलाओं का राजनीतिक विकास पुरूषों की तुलना में न्यून है। दोनों लैंगिक वर्गों के राजनीतिक विकास सूचकांक का अन्तर सार्थक है। अतः प्रमाणिक रूप से यह कहा जा सकता है कि लिंग भेद राजनीतिक विकास सम्बन्धी स्तरान्तरों के लिए उत्तरदायी है। विभिन्न जातीय वर्गों के मध्य राजनीतिक विकास की दृष्टि से कतिपय अन्तर व्याप्त हैं। उच्च जातियां ब्राह्मण एवं क्षत्रिय राजनीतिक विकास की दृष्टि से उच्च स्थिति में हैं। जबकि अनुसूचित जनजाति तृतीय स्थान व अनुसूचित जाति सर्वाधिक न्यून स्थिति में है।

मध्य हिमालय के उत्तरदाताओं के राजनीतिक विकास को शैक्षिक स्तर स्पष्टतः प्रभावित कर रहा है। चूंकि उत्तरदाताओं के निरंतर शैक्षिक स्तर में उच्चता के साथ राजनीतिक विकास सूचकांकों में भी पर्याप्त वृद्धि हो रही है। अतएव मध्य हिमालयी क्षेत्र में उत्तरदाताओं की शैक्षिक स्थिति उनके राजनीतिक विकास को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है। राजनीतिक विकास पर पारिवारिक संरचना का प्रभाव स्वरूप स्पष्ट है। एकल परिवार के उत्तरदाताओं का राजनीतिक विकास सूचकांक मान संयुक्त परिवार के

उत्तरदाताओं से कुछ आगे है। अतः दोनों समूहों के मध्य व्याप्त अन्तर प्रमाणिक है। अतएव यह स्पष्ट है कि राजनीतिक विकास की दृष्टि से पारिवारिक संरचना उत्तरदाताओं को प्रभावित करती है।

आय के सम्बन्ध में प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं के राजनीतिक विकास वृद्धि में आय वर्द्धन सहायक है। वैवाहिक स्थिति के आधार पर यह स्थिति स्पष्ट होती है कि अविवाहितों का राजनीतिक विकास, विवाहितों की तुलना में प्रमाणिक रूप से उच्च है। व्यावसायिक वर्ग संरचना के आधार पर राजनीतिक विकास स्तर के आंकलन से स्पष्ट है कि नौकरी व व्यापारी वर्ग का राजनीतिक विकास सूचकांक सर्वोच्च है। जबकि अधययनरत उत्तरदाता वर्ग तृतीय स्थान पर तथा कृषक वर्ग चतुर्थ स्थान पर है। समस्त व्यावसायिक वर्गों में सर्वाधिक राजनीतिक विकास सूचकांक अंतर नौकरी व कृषकों के मध्य है।

उपरोक्त विश्लेषण से यह तथ्य उजागर होता है कि मध्य हिमालय के गढ़वाल मण्डल के उत्तरदाताओं का राजनीतिक विकास आयु, जाति, पारिवारिक संरचना व व्यवसाय से लघु रूप में प्रभावित होता है। जबकि लिंग, शैक्षिक स्थिति, आय एवं वैवाहिक स्थिति जैसी वैयक्तिक विशिष्टतायें उत्तरदाताओं के राजनीतिक विकास को प्रबल रूप से प्रभावित कर रही हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. लवानिया, एम0एम0, शशि के0 जैन (राजनीतिक समाजशास्त्र, रिसर्च पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1997, पृ0 59.
2. सैमुअल, पी0 हटिंगटन एण्ड जॉन आई डोमिन ग्यूज ''पॉलिटिकल डेवलपमेंट'' इन फ्रेंड ग्रीनस्टेन एण्ड नेलसन डब्ल्यू पोल्स्वे (सम्पादित), हेण्डबुक ऑफ पॉलिटिकल साइंस III, मॉस एडीसन वेसले, 1975, पृष्ठ0 98.
3. ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी, कोटेड वाई वाटामोर टी.वी.(सोशियोलाजी, अनविन यूनिवर्सिटी, बुक्स लन्दन, 1956, पृष्ठ 265.
4. धर्मवीर, राजनीतिक समाजशास्त्र राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1998, पृ0 133.
5. उपरोक्त, पृष्ठ 133.
6. सकलानी, शशिकला, राजनीतिक विकास : जौनसारी एवं जाड़ भोटिया जनजाति का तुलनात्मक अध्ययन, डी0फिल0 शोध प्रबन्ध, हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल), 1999
7. अग्रवाल, भुवनेश्वर नारायण (राजनीतिक समाजशास्त्र, किताब महल, इलाहाबाद, 1987,पृ0 103.
8. वर्मा, श्याम लाल, आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ, 1989, पृ0 620.
9. लुसियन, डब्ल्यू पाई, कम्यूनिटी एण्ड पॉलिटिकल डेवलपमेंट, प्रिंस्टन, लिटिल ब्राउन, 1963,पृ0 19.
10. थपलियाल, देवकृष्ण, उत्तराखण्ड में पर्यावरणीय जनचेतना एवं राजनीतिक जागरूकता (जनपद चमोली का एक विशेष अध्ययन), डी0 फिल0 शोध प्रबन्ध, हे0न0ब0ग0 विश्वविद्यालय श्रीनगर, (गढ़वाल), 2003, पृ0 166.

11. कोठारी, रजनी, कास्ट इन इण्डियन पॉलिटिक्स, आरियन्ट लागमेन्स, नई दिल्ली, 1970, पृ0 4.
12. अब्राहिम, ए0 फ्रांसिस, डाईनामिक्स आफॅ लीडरशिप इन विलेज इण्डिया, इण्डिया इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, 1974, पृ0 48.
13. सल्टेन, डस्टालन, आर0 ह्यूमन रिलेशंस इन एडमिनिस्ट्रेशन, मेग्रो हिल, न्यूयार्क, 1959, पृ0 338.
14. ऑमण्ड, जी0 ए0 व सिडनी वर्बा, द सिविक कल्चर, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1963, पृ0 315
15. कुमार, आनन्द, समाजशास्त्र के मूल सिद्धांत, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली, 1996, पृ0 77.